राजयोग को उपचार प्रक्रिया के रूप में शामिल किया जाना चाहिए - कुलकर्णी

माउंट आबू, 27 जुलाई। वर्तमान परिवेश में बढ़ती विभिन्न प्रकार की तनावजन्य व्याधियों से निजात पाने को चिकित्सकों से ईलाज करवाने के साथ भारत का प्राचीन सहज राजयोग भी अहम भूमिका अदा कर रहा है। यह बात राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय औरंगाबाद अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष प्रो. डॉ. ए. टी. कुलकर्णी ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में चिकित्सा प्रभाग की ओर से माइंड-बॉडी-मेडिसन विषय आयोजित अखिल भारतीय सेमीनार के उदघाटन सत्र में देश के विभिन्न हिस्सों से आए चिकित्सकों को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि मनुष्य की चेतना जिस प्रकार का संकल्प करती है तो उसकी सोच से शरीर भी प्रभावित होता है। वर्तमान समाज में बढ़ती मानसिक, शरीरिक व्याधियों की रोकथाम के लिए सहज राजयोग को उपचार प्रक्रिया के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।

ब्रह्माकुमारी संगठन की संयुक्त मुख्य प्रशासिका, युवा प्रभाग अध्यक्ष राजयोनिगी दादी रतनमोहिनीजी ने कहा कि अनावश्यक इच्छाओं की तरंगे मस्तिषक पर हावी होने से ही तनाव बढ़ता है। दवा से ज्यादा दुआ काम करती है, दुआयें मांगने से नहीं बल्कि सच्चे दिल से सेवा करने पर ही मिलती हैं।

बीएईएस अस्पताल मुंबई प्रसिद्ध केंसर विशेषज्ञ डॉ. अशोक मेहता ने कहा कि मनुष्य अपनी आंतरिक आत्मा की मूलभूत शक्ति, गुण, शांति, आनंद, पवित्रता और प्रेम आदि की स्मृति और अनुभूति में रहकर उसको वातावरण में प्रवाहित करें तो इसके आधार पर एक स्वस्थ, समरस और सुखमय मानवीय संस्कृति तथा श्रेष्ठ सभ्यता की संरचना का निर्माण हो सकता है। चिकित्सकों को राजयोग विषय पर वैज्ञानिक पद्धति से अनुसंधान करना चाहिए जिससे समाज में आर्थिक रूप से पिछड़े तबके के असहाय लोगों का कम से कम पैसे में सुलभ इलाज हो सके।

जी.बी. पंत अस्पताल दिल्ली चिकित्सा अधीक्षक डॉ. मंजू शुक्ला ने कहा कि जितना मानवीय चेतना श्रेष्ठ, सकारात्मक, स्वच्छ, स्वस्थ एवं शक्तिशाली होगी उतना ही उसकी चिंतन प्रवृति, चरित्र, कर्म और जीवनस्तर उच्च एवं महान होगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान की ओर से दी जा रही राजयोग विद्या में आध्यात्मिक स्वास्थ्य को सर्वोतम प्राथमिकता दी गई है, यह निर्विवाद सत्य है कि जब तक मनुष्य आध्यात्मिक दृष्टि से स्वस्थ न हो तब तक वह मानसिक व शरीरिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ होने का दावा नहीं कर सकता।

ग्लोबल अस्पताल चिकित्सा अधीक्षक डॉ. प्रताप मिढ्ढा ने कहा कि राजयोग के अभ्यास द्वारा मन को श्रेष्ठ बनाने की कला सीखकर चिकित्सक रोगियों का कल्याण कर सकते हैं। चिकित्सक स्वयं जब स्वस्थ मन, खुशी मन से रोगियों को मिलेंगे तो रोगियों की आधी बीमारी पहले ही समाप्त हो जायेगी।

मनोचिकित्सक डॉ. गिरीश पटेल ने कहा कि व्याधियों के निराकरण में आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग का अहम योगदान है। प्रभाग सचिव डॉ. बनारसीलाल साह ने कहा कि मरीजों के प्रति डाक्टर के मन में प्यार होना चाहिए तभी उनका जीवन सफल माना जायेगा। इससे पूर्व दीप प्रज्जवलित कर सेमीनार का विधिपूर्वक उदघाटन किया।

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, simply open the document you want to convert, click “print”, select the “Broadgun pdfMachine printer” and that’s it! Get yours now!